**International Research Journal of Human Resources and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018**
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# दीन दयाल उपाध्याय का आर एस एस व जनसंघ से संबंध।

PARVEEN KUMAR,
ASSISTANT PROFESSOR,
SHRI SANT RAM (S.S.R.) COLLEGE OF EDUCATION, KACHHWA- KARNAL

भू मका- पण्डित दीन दयाल उपाध्याय राष्ट्र के सच्चे राष्ट्र भक्त के रूप में भारतवाससयों के प्रेरणास्त्रोत रहे हैं।दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 ससतम्बर 1916 को जयपुर ण्जले के धानक्या ग्राम में, नाना चुन्नीलाल के यहाँ हुआ था | इनके पपता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था तथा ये नगला चंदभान( फरह, मथुरा) के ननवासी थे | माता रामप्यारी धास मक पवचारों वाली स्त्री थीं। इनके पपता रेलवे में जलेसर रोि स्त्टेशन पर सहायक स्त्टेशन मास्त्टर थे |रेल की नौकरी होने के कारण उनके पपता का ज्यादातर समय बाहर ही बीतता था। वे कभी-कभी छु ्टसमलने पर ही घर आते थे। 3 वर्ि की मासूम उम्र में दीन दयाल पपता के प्यार से वंचचत हो गये और पनत की मृत्यु से माा ँ रामप्यारी को अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा। वे अत्यचधक बीमार रहने लगीं उन्हें क्षय रोग लग गया। 8 अगस्त्त 1924 को रामप्यारी जी का देहावसान हो गया। इस तरह 7 वर्ि की कोमल अवस्त्था में दीन दयाल माता-पपता के प्यार से वंचचत हो गये । आपको पढ़ाई का शौक बचपन से ही था। इडटरमी डएटकी परीक्षा में आपने सवाि्चधक अंक प्राप्त कर एक अनत मेधावी छार होने का कीनतिमान स्त्थापपत ककया। उपाध्याय जी ने पपलानी, आगरा तथा प्रयाग में सशक्षा प्राप्त की। बी०.एससी० बी०टी० करने के बाद भी उन्होंने नौकरी नहीं की । आप अण्न्तम सांस तक ण्जन्दगी परम सत्य की खोज में लोक कल्याण से भरे जीवन्त साहहत्य की रचना करने तथा उसे साकार करने जुटे रहे। ‘‘न जाने कौन सी दौलत थी उनके लहजे में, वो बोलते थे तो दुननया खरीद लेते थे’’ । 11 फरवरी, 1968 को वे लखनऊ से पटना जा रहे थे। रास्त्ते में ककसी ने उनकी हत्या कर मुगलसराय रेलवे स्त्टेशन पर लाश नीचे फेंक दी। इस प्रकार अत्यन्त रहस्त्यपू णपररण्स्त्थनत में एक मनीर्ी का ननधन हो गया।

**© Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

दीन दयाल उपाध्याय का आर एस एस व जनसंघ िें योगदान:-

भारतीय जनता पाटी के प्रनत समाज में जो कुछ भी आदर का भाव है और अन्य राजनीनतक दलों से भाजपा ण्जस तरह अलग हदखती है, उसके पीछे महामानव पं डत दीनदयाल उपाध्याय की तपस्त्या है। दीनदयाल जी के व्यण्क्तत्व, चचंतन, त्याग और तप का ही प्रनतफल है कक आज भारतीय जनता पाटी देश की सबसे बडी पाटी बनकर राजनीनत के शीर्ि पर स्त्थापपत हो सकी है। राज्यों की सरकारों से होते हुए केन्द्र की सत्ता में भी मजबूती के साथ भाजपा पहुंच गई है। राजनीनतक पं डतहमेशा संभावना व्यक्त करते हैं कक यहद दीनदयालजी की हत्या नहीं की गई होती तो आज भारतीय राजनीनत का चररर कुछ और होता। दीनदयालजी श्रेष्ठ लेखक, परकार, पवचारक, प्रभावी वक्ता और प्रखर राष्ट्र भक्त थे। सादा जीवन और उच्च पवचार के वे सच्चे प्रतीक थे। राजनीनत उनके सलए कैररयर नही थी, न ख्यानत का साधन था और न ही ताकत हाससल करने का उपकरण। वे जानतवाद मुक्त राजनीनत के प्रवक्ता के रूप में थे। वे गरीब, ककसान, मजदूर और हासशये के लोगों के उत्थान की बात करते थे और सामंती संस्त्कृनत पर प्रहार भी करते थे । उन्होंने शुचचता की राजनीनत के कई प्रनतमान स्त्थापपत ककए थे । वे 1937 में सनातन ध मकॉलेज , कानपुर में एक छार थे , तभी वह अपने सहपाठी बालूजीमहाशब्दे के माध्यम से राष्ट्रीय स्त्वयंसेवक संघ (आरएसएस ) के साथ संप कमें आया । उन्होंने 1942 से राष्ट्रीय स्त्वयंसेवक संघ के सलए पू णकासलककाम करने के सलए खुद को समप पतककया । उन्होंने कहा कक उन्होंने संघ में प्रसशक्षण सलया था तथा नागपुर में 40 हदन की गमी की छु ट्टीमें आरएसएस सशपवर में भाग सलया । आरएसएस सशक्षा पवंग में द्पवतीय वर्ि के प्रसशक्षण पूरा करने के बाद , पं डत दीन दयाल उपाध्याय आरएसएस के एक आजीवन प्रचारक बन गए। दीन दयाल उपाध्याय एक जबरदस्त्त सामाण्जक पवचारक के पवसभन्न पहलुओं को प्रनतबबंबबत करने वाले , अ थशास्त्री सशक्षाशास्री, राजनीनतज्ञ, लेखक, परकार, वक्ता थे।

1951 में िॉ. श्यामा प्रसाद मुखजी ने भारतीय जनसंघ की स्त्थापना की । दीन दयाल अपने उत्तर प्रदेश शाखा के पहले महासचचव बने. इसके बाद, इन्हें अखखल भारतीय महासचचव के रूप में चुना गया था । दीन दयाल के कौशल और सूक्ष्मता ने िा. श्यामा प्रसाद मुखजी को प्रभापवत बहुत प्रभापवत ककया और उनसे अपने सलए प्रससद्ध हटप्पणी हाससल की। उसने कहा कक "यहद मेरे पास दो दीन दयाल होते, तो मैं भारत का राजनीनतक चेहरा बदल देता।" 1953 में िॉ. मुखजी की मृत्यु के बाद अनाथ संगठन के पोर्ण और एक

देशव्यापी आंदोलन का पूरा बोझ दीनदयाल के युवा कंधों पर चगर गया। 15 साल तक, वह संगठन के महासचचव रहे और इसे समप पतकायिकताओं के सहयोग से संगठन को एक वैचाररक ढांचा प्रदान ककया। दीनदयाल उपाध्याय संभवतः पहले भारतीय राजनीनतक पवचारक थे, ण्जन्होंने वाम-दक्षक्षण पवभाजन को कृबरम और लोकतांबरक पवकास में बाधक मान कर अस्त्वीकार कर हदया। उन्होंने कम्युननस्ट्टों के आयानतत पवचार को अभारतीय करार हदया तो हहंदू महासभा, राम राज्य पररर्द और स्त्वतंर पाटी के जनसंघ के साथ पवलय को भी खाररज कर हदया। यह पवलय भी तब लगभग सोलह प्रनतशत से अचधक मतों का हकदार बन जाता। उपाध्याय के सलए राजनीनतक अण्स्त्तत्व से अचधक राजनीनतक अण्स्त्मता महत्त्वपू ण थी। इसका पररचय तो उनके प्रभाव में जनसंघ ने 1953 में ही दे हदया था। राजस्त्थान में जागीरदारी उन्मूलन पवधेयक लाया गया था। जनसंघ के पास पवधानसभा में आठ पवधायक थे। उनमें छह पवधायक इस पवधेयक के पवरोधी थे। उसके सामने यह कहठन प्रश्न था। छह पवधायकों को पाटी से ननकाल हदया गया। वे पवचार को क मकांि नहीं मानते थे। इससलए जब दलों के पवलय का प्रश्न आया तो उन्होंने वैचाररक प्रश्नों को उनके सामने रखा ।हहंदू महासभा से उन्होंने पूछा कक ण्जन कारणों से ि. श्यामा प्रसाद मुखजी उससे अलग हुए थे, क्या वे कारण समाप्त हो गए?

वह कारण था गैर-हहंदूओं के महासभा में प्रवेश का। पवलय का यह प्रस्त्ताव स्त्वयं ही हो गया। इसी प्रकार उन्होंने राम राज्य पररर्द के 'सामाण्जक यथाण्स्त्थनतवाद' के ससद्धांत को जनसंघ के दृण्ष कोण्के प्रनतकूल मानते हुए कहा कक 'राम राज्य पररर्द करपारीजी की कुहटया से नहीं संचासलत होकर महलों से संचासलत होती है।' स्त्वतंर पाटी के साथ जनसंघ के पवलय का लंबा प्रयास चला। पर स्त्वतंर पाटी की आच थकपवचारधारा से उपाध्याय पू ण पू णरूप से असहमत थे। उन्होंने कहा कक यह 'दलाल स्त्रीट की पाटी' मानी जाती है और ण्जन कारणों और कायिक्रमों की बुननयाद पर इसकी स्त्थापना हुई वह जनसंघ की पवचारधारा से मेल नहीं खाती है । स्त्वतंरता के बाद सत्ता तो हस्त्तांतररत हुई, पर राजनीनतक संरचना और सोच अपररवनतित रही। उपाध्याय ने इसका कारण माना कक ककसी भी प्रकार की सोच-समझ या पवचार के प्रनतपादन में यूरोप केंहरत रहने की हमारी आदत बन गई है। राजनीनत को वे अपने आप में स्त्वायत्त नहीं मानते थे। राजनीनत का संस्त्कृनत , समाज और आध्यात्म से जीवंत संबंध होता है, तभी वह राजनीनत उद्देश्यमूलक और संवेदनशील हो सकती है। जो प्रशासननक और पवकास की संरचना जनजानतयों के सलए आवश्यक है, वही संरचना दूसरे व गके सलए आवश्यक हो यह जरूरी नहीं है। गांव की

पवर्मता और जानत की जडता को समाप्त करने के सलए नई भागीदारी युक्त प्रशासननक संरचना पर उन्होंने जोर हदया। वे मूलत: व्यवस्त्था पररवतिन के हहमायती थे।

राजनीनतक जीवन से बाहर रह कर आद शकी बात करना आसान है और उसके केंर में रह कर आद श पर अ डग रहना कहठन है। राजनीनत में चुनाव अण्ननपरीक्षा के समान होता है, ण्जसमें सामाण्जक यथा थऔर भपवष्ट्य के समाज की कल्पना के सलए बनाए गए आदशों के बीच टकराव होता है। इस संद भमें 1963 में चार लोकसभा क्षेरों के उपचुनाव में उपाध्याय की भूसमका उल्लेखनीय है। पवपक्ष के चार हदनगज कांग्रेस को चुनौती दे रहे थे। ये थे राजकोट से स्त्वतंर पाटी के मीनू मसानी, उत्तर प्रदेश में फरूिखाबाद से समाजवादी राममनोहर लोहहया, अमरोहा से जेबी कृपलानी और जौनपुर से दीनदयाल उपाध्याय।

लोहहया 1962 के चुनाव में नेहरू के खखलाफ फूलपुर से चुनाव लड चुके थे। नेहरू िॉ. लोहहया और कृपलानी को संसद में आने से रोकने के सलए कहटबद्ध थे। तब दीनदयाल उपाध्याय ने नेहरू और कांग्रेस की एकाचधकार प्रवृपत्त, 'एक दल, एक नेता, एक ससद्धांत' को लोकतंर के सलए घातक माना। लोहहया जैसे राष्ट्रीय नेता को जानत के आधार पर अपना क्षेर चुनना पडा। इस पर क्षोभ प्रकट करते हुए वे उनके सम थनमें प्रचार करने गए। नेहरू ने कृपलानी को पराण्जत करने के सलए 'वोट बैंक' की राजनीनत का श्रीगणेश अमरोहा से ही ककया था। कांग्रेस की ण्जला ससमनत से लेकर संसदीय ससमनत ने रामशरण को अपना उम्मीदवार बनाया, तो नेहरू ने अंनतम समय में दलीय फैसले को नजरअंदाज करते हुए अपने कैबबनेट के ससंचाई एवं ऊजाि मंरी हाकफज मोहम्मद इब्राहहम को उम्मीदवार बना हदया।

उपाध्याय ने कृपलानी की जीत को जनसंघ की नैनतक ण्जम्मेदारी मानते हुए उनका चुनाव एजेंट तक जनसंघ के नेता रमेश कुमार को बनाया। वे स्त्वयं राजनीनत को तात्कासलक सफलता-पवफलता के आईने में नहीं देखते थे। जहां जानतपवहीन समाज के प्रवक्ता िॉ. लोहहया जातीय समीकरण के आधार पर फरूिखाबाद से चुनाव लड रहे थे वहीं दीनदयाल उपाध्याय ने जौनपुर में अपने पक्ष के जातीय समीकरण को स्त्वयं ही अपना पवरोधी बना सलया। क्योंकक वे सभाओं में जानत के आधार पर मतदान की ननंदा करते हुए उन लोगों से चले जाने की अपील करते थे, जो जानत के आधार पर उनका सम थनकरने आते थे। जौनपुर की सीट जनसंघ के ही सांसद की मृत्यु के कारण खाली हुई थी। उन्होंने अपने आद शवादी यथा थको व्यावहाररक यथा थके सामने झुकने नहीं हदया। वे हार गए और संदेश हदया कक कक 'दीनदयाल हार गया, जनसंघ जीत गया'। वे जीतते तो जौनपुर का चुनाव उल्लेखनीय

नहीं होता। वे ण्जन कारणों और ण्जस उद्देश्य से हारे उससे यह चुनाव भारतीय राजनीनत के इनतहास में रेखांककत हो गया। भले ही राजनीनत आज जातीय सांप्रदानयक समीकरणों के दलदल में फंसी हुई है, पर जौनपुर का चुनाव उस बीज की तरह भारतीय उपचेतना में पवद्यमान है, जो राजनीनत को इस दलदल से ननकालने का संकल्प था।

ववदेश िेें जनसंघ फोरि का ननिाोण:-

पं डतदीनदयाल उपाध्याय की वैचाररक क्षमता और नेतृत्व की असाधारण योनयता ही थी कक उन्हें पवदेश में भी जनसंघ अनुयायी बना हदए थे जब वे इंनलैंि यारा पर गए तो वहााँ रहने वाले भारतीयों और पवद्याच थयोंसे समले और उन्हें जनसंघ के बारे में बताया। सभी को भारतीयों के प्रचार प्रसार हेतु प्रेररत ककया। इंनलैंि में खुद भारतीय दूतावास जनसंघ को हहन्दू सम्प्रदायवादी संस्त्था कहता था। मगर पं डतजी ने अपने वाकपटुता और स्त्पष्ीकरणसे उन लोगो की मानससकता बदल दी, जो जनसंघ को सम्प्रदायवादी कहते थे। इस तरह उनकी कडी मेहनत ने जनसंघ को पवदेश में भी लोकपप्रय बना हदया और लंदन में जनसंघ की स्त्थापना हुई।

इस तरह राजनीनत के क्षेर में पं डतदीनदयाल उपाध्याय के योगदान ने जनसंघ जैसा पवशाल दाल तो उतारा ही बण्ल्क इससे तात्कासलक कांग्रेस सरकार भी जनसंघ को प्रबल प्रनतद्वंद्वी मानकर सत कहो गई। पहले ननसंकट चल रही सरकार अब फूंक फूंककर कदम रखने लगी। इससे बडा अन्य कोई राजनीनतक पुरस्त्कार ककसी व्यण्क्त पवशेर् को और क्या समलेगा कक उसके दल से सत्तारूढ़ सरकार भयभीत हो उठे। इस प्रकार इस महान व्यण्क्त ने अपनी कडी मेहनत से पवदेश में में भी जनसंघ के परचम लहराया।

ननष्कर्ा:-

आज भी पं डतदीन दयाल उपाध्याय जी लोगों के हदलों-हदमाग में ण् ंदा है। हमारा मानना है कक पं. दीन दयाल उपाध्याय जी के पवचार देश ही नहीं, दुननया का मा गद शन्कर सकते हैं। उनके पवचार आज भी देश को प्रगनत के मा गपर ले जा रहे हैं और यह उनकी ही देन है कक देश में लोकतंर का मतलब सबके सलए एक समान है. पवरासत के तौर पर उनकी याद में कई संस्त्थानों, पवण्श्वद्यालयों, अस्त्पतालों का ननमा णककया गया.

परम ब्रह्म में पवलीन होने के बाद भी पं डतजी अपनी लेखनी, ज्ञान, सशक्षा और उच्च पवचारों से आज भी हमारे बीच लोकपप्रय हैं. ऐसे महान व्यण्क्तत्व को हम शत-शत नमन करते हैं।

सन्दभा ग्रंथ सूची:-

"Deendayal Upadhyaya". Bharatiya Janata party. Retrieved 12 September 2014

चौहान राजेश 2014 “भारतीय संस्त्कृनत के प्रबल सम थक जनसंघ के प्रबल सारथी और भारतीयता के प्रबल पुरोधा पं डतदीनदयाल उपाध्याय के त्यागमय जीवन की गौरव गाथा।” पेज- 31,32

शमाि हरीश दत्त “पं डतदीनदयाल उपाध्याय ” पेज संख्या 3

साप्ताहहक पबरका ( पाचजन्य ) 2007, आण्श्वन कृष्ट्ण रपव संवत

"Who was Deendayal Upadhyay, the man PM Narendra Modi often refers to in his speeches?", India Today, 21 September 2017

Gatade Subhash se 2017 https:// www.outlookindia.com